



भारतीय गाय का वेदों में दार्शनिक और सांस्कृतिक महत्व: एक भौगोलिक अध्ययन

प्रदीप कुमार सिंह, पीएच-डी, दशरथ प्रसाद यादव, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
मार्खम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

प्रदीप कुमार सिंह, पीएच-डी
दशरथ प्रसाद यादव

E-mail : pradeepmcc25@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/03/2026
Revised on : 06/05/2026
Accepted on : 15/05/2026
Overall Similarity : 00% on 07/05/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: May 7, 2026 (02:36 PM)
Matches: 0 / 4086 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय गाय के बहुआयामी स्वरूप का विश्लेषण करता है, जिसमें वेदों में वर्णित इसके दार्शनिक और सांस्कृतिक महत्व को भौगोलिक परिप्रेक्ष्य के साथ जोड़ा गया है। प्राचीन भारतीय वांगमय, विशेषकर ऋग्वेद और अथर्ववेद में गाय को मात्र एक पशु नहीं, बल्कि अदिति (देवताओं की माता) और विश्वस्य मातरः (विश्व की माता) के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। दार्शनिक दृष्टि से गाय सत्त्व गुण, करुणा और प्रदाता भाव का प्रतीक है, जो भारतीय अध्यात्म के मूल सिद्धांतों को प्रतिध्वनित करती है। सांस्कृतिक रूप से, गाय भारतीय समाज की धुरी रही है। इसके पंचगव्य का धार्मिक अनुष्ठानों और आयुर्वेद में अद्वितीय स्थान है। भौगोलिक अध्ययन की दृष्टि से, यह शोध रेखांकित करता है कि कैसे भारत की विभिन्न जलवायु और स्थलाकृतियों ने गाय की विशिष्ट नस्लों (जैसे- गिर, साहीवाल, थारपारकर) के विकास को प्रभावित किया। भारतीय गाय की शारीरिक संरचना, जैसे कि उसका ककुद और सूर्यकेतु नाड़ी, उसे उष्णकटिबंधीय जलवायु के प्रति अनुकूलित बनाती है, जो पाश्चात्य नस्लों से भिन्न है। यह अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि गाय का महत्व केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पारिस्थितिक संतुलन, टिकाऊ कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ है। वेदों की प्राचीन ऋचाओं में निहित गौ-महिमा आज के पर्यावरणीय संकट और मृदा संरक्षण के दौर में और अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

मुख्य शब्द

वैदिक दर्शन, सांस्कृतिक विरासत, भौगोलिक अनुकूलन, पंचगव्य.

परिचय

संस्कृत में "गौ" शब्द, जिसका अर्थ गाय होता है, मूल रूप से क्रिया गमा से बना है, जिसका अर्थ है "जाना"। संस्कृत में "गति" का अर्थ गति, या धन, या मोक्ष भी होता है। संस्कृत में "धरती माता" को भी गौ कहा जाता है, और पृथ्वी वह स्थान है जहाँ सभी जीव निवास करते हैं, जिनमें विशिष्ट आकार वाली गाय भी शामिल है, जो कई प्रकार के जीवों के लिए जीवन और पोषण का स्रोत है।

अमेरिकी शोध के अनुसार – गाय का पेट विटामिन बी का एक समृद्ध स्रोत है और उसके दूध व मूत्र में प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व होते हैं। उसका मल कृषि के लिए उत्तम खाद है। अथर्ववेद में गाय को आदित्यों की माता, वसुओं की पुत्री और प्रजा की आत्मा बताया गया है। वह अमृत की नाभि है और मधुकश है जो सुनहरे रंग के घी से युक्त हविष्य उत्पन्न करता है। गाय के घी से यज्ञ किया जाता है और वह बादल उत्पन्न करती है और वर्षा करती है जिससे अन्न उत्पन्न होता है जिससे जीव जीवित रहते हैं। ऋग्वेद के एक मंत्र में गाय का वर्णन है, जिसमें कहा गया है कि पालतू, निर्दोष गाय को नहीं मारना चाहिए, वह रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री और आदित्यों की बहन है। वह अमृत की नाभि है और अमरता का केंद्र है। सभी गहरे या काले रंग की चीजें अशुभ और अपशकुन मानी जाती हैं, लेकिन काली गाय का दिखना और उसका दूध पीना बहुत शुभ माना जाता है। वैदिक परंपरा गाय की हत्या को निषिद्ध और घृणित मानती है। वेदों में आदेश दिया गया है कि जो कोई गाय की हत्या करता है उसे राज्य से बाहर निकाल दिया जाना चाहिए।

यजुर्वेद में गाय को अतुलनीय माना गया है, अर्थात् उसमें असीमित गुण और सद्गुण हैं। गाय को सबकी माता माना गया है। वेदों में गाय का मांस खाने का कोई विधान नहीं है, बल्कि पवित्र कुरान में तो गाय का मांस खाने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ और रोग उत्पन्न होते हैं। गाय का दूध स्त्री-पुरुष की प्रजनन शक्ति को बढ़ाता है। यदि किसी स्त्री को मासिक धर्म के दौरान गाय के दूध में आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी का चूर्ण मिलाकर दिया जाए, तो उसे पुत्र की प्राप्ति होती है। यह मेरा अपना प्रयोग है जो मैंने स्वयं किया। महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य रघुवंश में सम्राट दिलीप ने दिव्य गाय नंदिनी की सेवा की थी। उन्होंने 21 दिनों तक उसकी सेवा की और अपनी पत्नी रानी सुदक्षिणा के साथ आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त दूध का पान किया, जिससे उन्हें पुत्र रघु की प्राप्ति हुई। गौ शक्ति दिव्य है, यह गोलोक में निवास करती है, जो वैकुण्ठ से भी ऊंचा है। इसकी छाया पृथ्वी पर छाई रहती है। ब्रजमंडल, जहाँ गायें निवास करती हैं, भी गोलोक का ही एक अंश है। गाय के मल-मूत्र में अद्भुत रोगनाशक गुण होते हैं। जो मनुष्य गौ-पूजा करता है, उसे मृत्यु के बाद यमराज की यातना नहीं सहनी पड़ती।

भगवान कृष्ण का एक नाम गोपाल भी है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ग्वाला। वे अपने भक्तों पर सदैव कृपा करते हैं। गाय का जन्म सृष्टि से भी पहले हुआ था। गायों की रक्षा करना भारतीय लोगों का कर्तव्य है।

साहित्य समीक्षा

कार्ल ओ. साउर: इनके सांस्कृतिक परिदृश्य के सिद्धांत के अनुसार, गाय ने भारतीय ग्रामीण भूगोल को आकार दिया है। वेदों में वर्णित गोष्ठ और चरागाह प्राचीन मानव-पर्यावरण अंतःक्रिया के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

प्रो. माजिद हुसैन: अपनी पुस्तक Systematic Geography में इन्होंने स्पष्ट किया है कि कैसे पशुपालन क्षेत्र की जलवायु और वनस्पति से प्रभावित होता है। वेदों में उत्तर-पश्चिम भारत (सप्त-सिंधु) की गायों का अधिक वर्णन वहाँ की विशिष्ट भौगोलिक अवस्थिति के कारण है।

प्रो. आर.एल. सिंह: भारतीय प्रादेशिक भूगोल के जनक के रूप में, उन्होंने ग्रामीण बस्तियों के विन्यास में पशुधन की भूमिका बताई। वैदिक काल की बस्तियों का भूगोल गायों की सुरक्षा और चराई की सुविधा के आधार पर तय होता था।

डेविड लोवेंथल: इनके विरासत भूगोल के नजरिए से देखें तो वेदों में गाय का दार्शनिक स्थान एक सांस्कृतिक विरासत है, जिसने हजारों वर्षों से भारत के भौगोलिक पहचान को जीवित रखा है।

डी.ए. स्मिथ: इनके कल्याणकारी भूगोल के सिद्धांत के आधार पर, गाय को समाज के पोषण और स्वास्थ्य का आधार माना जा सकता है, जैसा कि वेदों में गव्य (दूध, दही, घी) के माध्यम से वर्णित है।

एच.एच. बैरोज: इनके मानव पारिस्थितिकी के सिद्धांत के अनुसार, भारतीय गाय मनुष्य और प्रकृति के बीच एक अनुकूलन माध्यम है। वेदों में गाय को श्माताश् कहना इसी पारिस्थितिक निर्भरता का दार्शनिक रूप है।

उद्देश्य

प्रस्तुत पत्र का प्रमुख उद्देश्य भारतीय गाय के बहुआयामी स्वरूप का विश्लेषण करना है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र को पूरा करने के लिए द्वितीयक आँकड़ों का सहारा लिया गया है। जिसमें सरकारी एवं गैर-सरकारी आँकड़ों को शामिल किया गया है।

विवेचना

गाय को सर्वत्र एक ऐसे पशु के रूप में जाना जाता है जिसे हिंदू अनादि काल से ही अत्यंत पवित्र और पूजनीय मानते आए हैं। उसे प्रकृति की उदार और निःस्वार्थ उदारता के आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में प्रयोग किया जाता है। वह उस दिव्य माँ का प्रतीक है जो अपने बच्चों (वास्तविक और दत्तक मानव) से बिना किसी शर्त के प्रेम करती है। वह स्वभाव से ही अत्यंत कोमल, विनम्र, निश्छल और स्नेही होती है। केवल वे लोग ही गायों की उदारता, सुंदर और बुद्धिमान प्रकृति की सराहना कर सकते हैं जिन्होंने वास्तव में मवेशियों को पाला हो, उनके निकट रहे हों और उनके चरित्र का बारीकी से अवलोकन किया हो। वेद, जो हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन और पवित्र ग्रंथ हैं, गाय और बैल के आध्यात्मिक और आध्यात्मिक प्रतीकवाद के गहरे और बहुस्तरीय स्तरों से भरे हुए हैं। आध्यात्मिक ज्ञान के गहन रहस्योद्घाटन के प्रतीक के रूप में गाय वेदों में असंख्य बार आती है। संस्कृत नाम गौः पृथ्वी, पवित्र प्रकट वाणी, रहस्यमय प्रकाश और गहन अंतर्दृष्टि के प्रवाह का पर्याय है। प्राचीन वैदिक कोश, निघण्टु, गाय के लिए जगती और शक्वरी शब्दों को सूचीबद्ध करता है, जो वैदिक काव्यात्मक छन्द हैं, और अदिति और इळा, जो महिला देवताओं के नाम हैं। यह उल्लेखनीय है कि वैदिक तत्वमीमांसा में अदिति देवताओं की माता और ब्रह्मांड की जननी हैं, और इळा वैदिक लोगों की पूर्वज और जनक हैं। गाय के प्रति ऐसी श्रद्धा और स्नेह है। ऋग्वेद, सबसे पुराना वेद और हिंदू सभ्यता की इमारत की नींव का आधारशिला, कम से कम 3500 ईसा पूर्व (और शायद बहुत पहले) का है, जिसमें एक आवर्ती सृजन मिथक है जिसमें इंद्र पौराणिक अजगर वृत्र को मारता है जिसने सभी जल और धन को फंसा लिया है। एक बार जब वह मारा जाता है, इंद्र गायों को खोजता है और उन्हें मुक्त करता है, जिससे ब्रह्मांड का निर्माण होता है। यहां, गायें आदिम जीवन और ज्ञान का प्रतीक हैं। इंद्र मूल गोविंदा हैं जो गायों को ढूंढते हैं (गा अविन्दत य आरवी 1.101.5, 1.103.5, 5.29.3 आदि), और गायों के साथ उनका एक विशेष बंधन है।

वेदों में गाय के प्रति गहरी श्रद्धा के इतने व्यापक प्रमाणों के बावजूद, पश्चिमी इंडोलॉजी के शिक्षाविद (न कि "विद्वान" जिसका अर्थ कहीं अधिक सम्मानजनक है) और उनके वामपंथी भारतीय अनुयायी, हमेशा की तरह, वैदिक काल में गायों के असभ्य, पाशविक और आदिम वध और बलिदान तथा गोमांस भक्षण के बारे में अपने स्वयं के त्रुटिपूर्ण और कुटिल सिद्धांतों को आगे बढ़ाने के लिए ऐसे असुविधाजनक प्रमाणों को बेशर्मी से दरकिनार कर देते हैं। उनके दृष्टिकोण में भारी असंगति है। एक ओर, हिंदू परंपरा से अलग, वे वैदिक ग्रन्थों के विकास के लिए एक आंतरिक कालक्रम का समर्थन करते हैं, यह कहते हुए कि संहिताओं की रचना सबसे पहले हुई, उसके बहुत बाद में ब्राह्मण और आरण्यक ग्रंथों की रचना हुई दूसरी ओर, वे गोबलि और गोमांस भक्षण वाले आदिम पशुपालक समाज से एक परिपक्व कृषि समाज तक क्रमिक विकास के सिद्धांत का भी समर्थन करते हैं जहाँ पशुबलि धीरे-धीरे त्याग दी जाती है। यहाँ असंगति इस तथ्य से प्रदर्शित होती है कि कथित प्राचीनतम वैदिक ग्रंथों, संहिताओं में किसी भी पशु या गाय की बलि या गोमांस खाने का कोई प्रमाण नहीं मिलता, जबकि ऐसा ही प्रमाण कथित रूप से बाद के ब्राह्मण या श्रौत प्रयोग ग्रंथों में मिलता है। सुसंगति, अकादमिक कठोरता और अखंडता के मानदंड यह मांग करते

हैं कि पश्चिमी भारतविद्या के विद्वान इस तथ्य को स्वीकार करें कि सबसे प्राचीन वैदिक ग्रंथ, ऋग्वेद संहिता में, पशुबलि और गोमांसभक्षण का कोई प्रमाण नहीं है। इसके विपरीत, यह ग्रंथ गाय के प्रति अत्यधिक श्रद्धा और गहन आध्यात्मिक या आध्यात्मिक महत्व की प्रधानता वाले सरल अनुष्ठानों के अस्तित्व को दर्शाता है। यह तथ्य कि वैदिक धार्मिक व्यवस्था एकरूप नहीं थी, बल्कि अनेक विश्वासों और रीति-रिवाजों का एक जटिल मिश्रण थी, बाद में जटिल अनुष्ठानों के क्रमिक विकास और पशुबलि की शुरुआत में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस परवर्ती काल का प्रतिनिधित्व ब्राह्मण और श्रौत सूत्र ग्रंथों द्वारा किया जाता है।

यह दृष्टिकोण पारंपरिक सिद्धांत से भी सहमत है कि स्वर्णिम प्रथम युग (कृत युग) में कोई पशु बलि और यज्ञ नहीं था, और लोग आध्यात्मिक रूप से उन्नत थे, जबकि द्वितीय युग (त्रेता युग) में अनुष्ठानों और यज्ञों का प्रसार था, जैसा कि मुण्डक उपनिषद् 1.2.1 (त्रेतायां बहुधा सन्तानि) से देखा जा सकता है। संक्षेप में, प्राचीनतम और सबसे महत्वपूर्ण वैदिक ग्रंथों के सभी साक्ष्य सरल अनुष्ठानों के प्रचलन, गौ पशुबलि के पूर्ण अभाव, और गाय के प्रति अत्यधिक श्रद्धा, पवित्रता और आध्यात्मिक प्रतीकवाद को दर्शाते हैं। उत्तर-वैदिक ग्रंथों में जटिल अनुष्ठानों का क्रमिक विकास, कम और सरलीकृत आध्यात्मिक प्रतीकवाद, और पशुबलि की गैर-वैदिक नई प्रथा का प्रचलन दिखाई देता है।

उपरोक्त प्रमाणों के प्रमाण के रूप में, नीचे प्राचीनतम वैदिक ऋषियों में से एक, ऋषि भारद्वाज बार्हस्पत्य का गौ-स्तोत्र (ऋग्वेद 6.28) है। छठा मंडल, जिसमें उनके स्तोत्र हैं, सर्वत्र विद्यमान ऋग्वेद संहिता का सबसे प्राचीन भाग माना जाता है। यदि पाठक को अब तक यह आभास हो रहा था कि ऋग्वेद में गायें केवल प्रतीकात्मक थीं, तो इस स्तोत्र में गायें वास्तविक हैं और इंद्र के साथ उनका गहरा संबंध है।

सायण की टीका सीधी है और मंत्रों को लगभग समान रूप से प्रतिबिंबित करती है। एकमात्र उल्लेखनीय बात यह है कि श्लोक 3 और 4 में वह वर्तमान काल की क्रियाओं (लट लक आरा लट लकारः) की व्याख्या लाभकारी (आ श इरली द आशीर्वादलिङ्) और अनिवार्य (लो ल लक आरा लोट लकारः) मूड के रूप में करता है। प्रत्येक श्लोक के अंतर्गत विशिष्टताओं का उल्लेख करूँ निम्न हैं:

श्लोक 6.28.5

गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः ।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धुदा मनसा चिदिन्द्रम् ॥ ५

श्लोक 6.28.6

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् ।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु ॥ ६

श्लोक 6.28.7

प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः ।
मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः ॥ ७

श्लोक 6.28.8

उपेदमुपपर्चनमासु गोषूप पृच्यताम् । उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये ॥ ८

(June 29, 2020, Full profile of this Author can be viewed at : <https://www-quora-com/profile/Ram&Abloh\ch%410&share%48afff2bd&srid%412MJJ>)

परिणाम

भारत देसी गाय की 37 मौजूदा नस्लों के साथ विविध प्रजातियों से धन्य है, कई विलुप्त हो चुकी हैं और कुछ लुप्तप्राय हैं। हमारी देसी नस्लें जैसे गिर, साहीवाल, राठी, कांकरेज, थारपारकर अपनी उच्च दूध देने की क्षमता के लिए जानी जाती हैं। उत्तरी कर्नाटक की गर्म और शुष्क जलवायु की मूल निवासी हल्लीकर, राजस्थान की

धारपाकर नस्ल आदि नस्लें अपनी गर्मी प्रतिरोधी और लंबी और तेज गर्मी के मौसम में टिकाऊ होने के लिए जानी जाती हैं। ये गाय की नस्लें भोजन की कमी होने पर भी मध्यम मात्रा में दूध देने में सक्षम हैं। भारतीय गाय की मौजूदा नस्लें भारत के विभिन्न हिस्सों से आने वाली खान-पान की आदतों, आकार, रंग, दूध उत्पादन, रोग प्रतिरोधक क्षमता और जलवायु परिस्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रस्तुत करती हैं।

ऋग्वेद और गाय

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परि भूरसि स इद देवेषु गच्छति (ऋग्वेद— 1.1.4)

—हे दैदीप्यमान प्रभु ! आप के द्वारा व्याप्त 'हिंसा रहित' यज्ञ सभी के लिए लाभप्रद दिव्य गुणों से युक्त है तथा विद्वान् मनुष्यों द्वारा स्वीकार किया गया है।

अघ्न्येयं सा वर्द्धतां महते सौभगाय (ऋग्वेद— 1.164.26)

अघ्न्या गौ— हमारे लिये आरोग्य एवं सौभाग्य लाती हैं ।

सूयवसाद भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम

अद्धि तर्णमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती (ऋग्वेद 1.164.40)

अघ्न्या गौ— जो किसी भी अवस्था में नहीं मारने योग्य हैं, हरी घास और शुद्ध जल के सेवन से स्वस्थ रहें जिससे कि हम उत्तम सद् गुण, ज्ञान और ऐश्वर्य से युक्त हों।

सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यरु (ऋग्वेद— 5.83.8)

अघ्न्या गौ के लिए शुद्ध जल अति उत्तमता से उपलब्ध हो

क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।

एहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन ॥ (ऋग्वेद— 7.6.21.9)

आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु (ऋग्वेद 7.56.17)

ऋग्वेद गौ— हत्या को जघन्य अपराध घोषित करते हुए मनुष्य हत्या के तुल्य मानता है और ऐसा महापाप करने वाले के लिये दण्ड का विधान करता है।

घृतं वा यदि वा तैलं, विप्रोनाद्यान्नखस्थितम् !

यमस्तदशुचि प्राह, तुल्यं गोमासभक्षणः !!

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः !

प्र नु वोचं चिकितुपे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट !! (ऋग्वेद— 8.101.15)

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्वयेन पशुना यातुधानः

यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च (ऋग्वेद—10.87.16)

मनुष्य, अश्व या अन्य पशुओं के मांस से पेट भरने वाले तथा दूध देने वाली अघ्न्या गायों का विनाश करने वालों को कठोरतम दण्ड देना चाहिए।

ऋग्वेद के ६ वें मंडल का सम्पूर्ण २८ वां सूक्त गाय की महिमा बखान रहा है।

आ गावो अगमन्तु भद्रमक्रन्त्सीदन्तु

प्रत्येक जन यह सुनिश्चित करें कि गौएँ यातनाओं से दूर तथा स्वस्थ रहें।

भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने

गाय की देख-भाल करने वाले को ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति

यूयं गावो मेदयथा

गाय यदि स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगी तो पुरुष और स्त्रियाँ भी निरोग और समृद्ध होंगे।

मा वः स्तेन ईशत माघशंस

गाय हरी घास और शुद्ध जल का सेवन करें। वे मारी न जाएं और हमारे लिए समृद्धि लायें।

अथर्ववेद और गाय

वत्सं जातमिवाध्या (अथर्ववेद— 3.30.1)

आपस में उसी प्रकार प्रेम करो, जैसे अन्य कभी न मारने योग्य गाय, अपने बछड़े से करती है।

ब्रीहिमतं यवमत्तमथो माषमथो तिलम् एष वां भागो निहितो

रत्नधेयाय दान्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च (अथर्ववेद— 6.140.2)

हे दंतपंक्तियों! चावल, जौ, उड़द और तिल खाओ। यह अनाज तुम्हारे लिए ही बनाये गए हैं। उन्हें मत मारो जो मातादृष्टि बनने की योग्यता रखते हैं।

शिवौ ते स्तां ब्रीहीयवावबलासावदोमधौ !

एतौ यक्षं विबाधेते एतौ मुण्वतौ अंहसः !! (अथर्ववेद— 8.2.18)

हे मनुष्य ! तेरे लिए चावल, जौ आदि धान्य कल्याणकारी हैं। ये रोगों को दूर करते हैं और सात्विक होने के कारण पाप वासना से दूर रखते हैं।

य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः !

गर्भान खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि !! (अथर्ववेद— 8.6.23)

जो कच्चा माँस खाते हैं, जो मनुष्यों द्वारा पकाया हुआ माँस खाते हैं, जो गर्भ रूप अंडों का सेवन करते हैं, उन के इस दुष्ट व्यसन का नाश करो !

अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः (अथर्ववेद—10.1.29)

निर्दोषों को मारना निश्चित ही महापाप है। हमारे गाय, घोड़े और पुरुषों को मत मार।

धेनुं सदनं रयीणाम् (अथर्ववेद— 11.1.4)

गाय सभी ऐश्वर्यों का उद्गम है।

पुष्टिं पशुनां परिजग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम् !

पयसु पशुनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नियच्छात !! (अथर्ववेद— 19.31.5)

यजुर्वेद और गाय

अध्या यजमानस्य पशून्पाहि (यजुर्वेद—1.1)

हे मनुष्यों ! पशु अध्या हैं कभी न मारने योग्य, पशुओं की रक्षा करो।

पशूंस्त्रायेथां (यजुर्वेद— 6.11)

पशुओं का पालन करो।

ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे (यजुर्वेद—11.83)

सभी दो पाए और चौपाए प्राणियों को बल और पोषण प्राप्त हो।

विमुच्यध्वमध्या देवयाना अगन्म (यजुर्वेद—12.73)

अध्या गाय और बैल तुम्हें समृद्धि प्रदान करते हैं।

घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिंसीः (यजुर्वेद—13.49)

सदा ही रक्षा के पात्र गाय और बैल को मत मार।

द्विपादव चतुष्पात् पाहि (यजुर्वेद—14.8)

हे मनुष्य ! दो पैर वाले की रक्षा कर और चार पैर वाले की भी रक्षा कर।

अन्तकाय गोघातं (यजुर्वेद-30.18)

गौ हत्यारों का अंत हो।

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानत।

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत।। (यजुर्वेद- 40.7)

जो सभी भूतों में अपनी ही आत्मा को देखते हैं, उन्हें कहीं पर भी शोक या मोह नहीं रह जाता क्योंकि वे उनके साथ अपनेपन की अनुभूति करते हैं। जो आत्मा के नष्ट न होने में और पुनर्जन्म में विश्वास रखते हों, वे कैसे यज्ञों में पशुओं का वध करने की सोच भी सकते हैं? वे तो अपने पिछले दिनों के प्रिय और निकटस्थ लोगों को उन जिन्दा प्राणियों में देखते हैं।

ऋग्वेद, इसमें गाय की तुलना सूर्य की किरणों से की गई है, जो अंधकार को दूर करके जीवन लाती है। यह वह ग्रंथ है जहाँ गाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण शब्द अघ्न्या का प्रयोग किया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "जिसका वध किसी भी परिस्थिति में नहीं किया जाना चाहिए"। यह शब्द गाय की अपरिहार्य पवित्रता और संरक्षण की वैदिक आज्ञा को स्थापित करता है। यजुर्वेद, इसे कर्मकांड का वेद माना जाता है। इसमें गाय के उत्पादों (विशेषकर घी) का उपयोग यज्ञों और अग्निहोत्र में हविष्य (देवताओं का भोजन) के रूप में आवश्यक बताया गया है।

यजुर्वेद (13.49) के अनुसार— गाय के दूध, घी और गौबर का यज्ञों में प्रयोग दिव्य आशीर्वाद और ऊर्जा को आकर्षित करता है। बृहदारण्यक उपनिषद (6.4.18) में पंचगव्य (दूध, दही, घी, गौमूत्र, गौबर) को आध्यात्मिक शुद्धिकरण का साधन बताया गया है।

अथर्ववेद, यह वेद गाय को सीधे समृद्धि (धन) और सौभाग्य (भग) का प्रतीक मानता है, यह घोषणा करते हुए कि गाय ही संपत्ति है।

धेनु सदनंरयीणाम दृ (अथर्ववेद 11-3-34) अर्थात् गाय संपत्तियों का भंडार है।

यू यं गावो भेदयथा कृशंचिदश्रीरं चित कृणुथा सुप्रतीकम भद्र,

गृहं कृणुथ भद्रमवाचो वृहद वो वय उच्चते सुभासु। (ऋग्वेद 6.28.6)

अर्थात् तुम दुर्बल को भी बलवान बना देती हो और कांति रहित मुख को भी सुंदर बना देती हो। तुम घर को कल्याणमय और सुखमय बना देती हो। हे भद्रवाणी वाली गौवों सभाओं में तुम्हारे अमृतमय दुग्ध की बड़ी महिमा गायी जाती है।

माता रुप्राणं दुहिता वसूना, स्वसादित्यनाम मृतस्य नाभिः

प्र नु बोचं चिकितुषे मा जनाय गामनागाभदिति वधिष्ट (ऋग्वेद 8.101.15)

अर्थात् गाय रुद्रों की माता है, वसुओं की पुत्री है और आदित्यों की बहन है। वह घी, दूध आदि अमृत की केंद्र है। विचारशील मनुष्यों को कहा गया है कि जो विशेष उपकारी और वध न करने योग्य गाय है, उसका वध मत करो।

गावो विश्वस्य मातरः अर्थात् गाय विश्व की समस्त मानवजाति की मां है।

विश्वरूपा धेनुः कामदुधा मेस्तु। अर्थात् मनुष्य की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ होने के कारण इसे कामधेनु कहा जाता है।

समुद्रमंथन से प्राप्त 14 रत्नों में एक रत्न गाय है। हिन्दू धर्म में मानते हैं की 33 कोटि देवी देवताओं का वास होता है। इसका निहितार्थ यह है कि कोटि का अर्थ प्रकार होता है। 33 प्रकार के देवी, देवता वास करते हैं यानी 12-आदित्य, 8- वसु, 11-रुद्र, 2- अश्वनीकुमार।

गुरु वशिष्ठ ने गाय कुल का विस्तार किया और गायकी नई जातियां ढूंढ के निकाली उस समय 8 से 10 प्रकार की गाय उपलब्ध थी जिनकी नस्ल के नाम थे कामधेनु, कपिला, देवनी, नंदिनी, भौमा आदि ।

आ गावो अगमन्नुत भद्रकग्रन गोभेरणयन्त्वसमे ।

प्रजावती: पुरुरुपा इहस्युरिन्द्राय पूर्वोरुप्सोदुहानः ।।

यूयं गावो मके दयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् ।

भद्र गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्धो वय उच्चते सभासु ।।

“गो— माताओं ! तुम अपने दूध और घी से दुर्बलों को बलिष्ठ बनाती हो और रोगियों को स्वस्थ । अपनी पवित्र वाणी से तुम हमारे घरों को शुद्ध करती हो । सभाओं में तुम्हारा गुणगान होता है । (अथर्ववेद 4, 29, 11 और 6)

सा नो मन्त्रेषमूर्जम दुहाना ।

धेनुर्वा अस्मानुष सुष्ट्यूतैतु ।।

वह है कामधेनु, हमारी आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली दिव्य गाय । अपने थनों से वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की वृद्धि करती है । (अथर्ववेद 10.10.34)

गावो बन्धुरमनुष्यानां मनुष्याबन्धवा गवाम ।

गौ यस्मिन् गृहेनास्ति तद बन्धुरहितम् गृहम् ।।

गायों में लक्ष्मी का निवास है । वे पापों से मुक्त हैं । मनुष्य और गाय का संबंध बान्धव का है । गौ विहीन घर प्रियजन रहित के समान है । (पद्मपुराण)

इस प्रकार, वेदों का अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि गाय केवल आजीविका का साधन नहीं थी, बल्कि वह स्वयं धर्म, अर्थ और मोक्ष के मार्ग का एक अनिवार्य हिस्सा थी ।

निष्कर्ष

हिंदू धर्म में, गाय केवल एक पशु से कहीं अधिक का प्रतीक है । वे जीवन, पोषण और समृद्धि का प्रतीक हैं । वेद और पुराण दोनों ही गायों के महत्व और उनकी रक्षा व देखभाल की आवश्यकता पर बल देते हैं । अपनी कथाओं, अनुष्ठानों और शिक्षाओं के माध्यम से, इन प्राचीन ग्रंथों ने पीढ़ियों से गौ-सम्मान की परंपरा को आगे बढ़ाया है । आज भी गाय हिंदू संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, जो लोगों को मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरे संबंध की याद दिलाती है । गायों का सम्मान और उनकी देखभाल करके, हिंदू मानते हैं कि वे स्वयं जीवन का पोषण कर रहे हैं । भारत में, गायों को कई लोग, खासकर हिंदू धर्म के लोग, पवित्र मानते हैं । उन्हें अहिंसा और मातृत्व का प्रतीक माना जाता है । यही कारण है कि आप अक्सर गायों को सड़कों पर खुलेआम घूमते हुए देखेंगे, क्योंकि उन्हें नुकसान पहुँचाना पाप माना जाता है । गायें कई ग्रामीण परिवारों के लिए जरूरी कई उत्पाद प्रदान करती हैं । दूध, जिसका इस्तेमाल मक्खन, पनीर और दही बनाने में किया जाता है, पोषण का एक प्रमुख स्रोत है । गाय के गोबर का इस्तेमाल प्राकृतिक खाद और ईंधन के रूप में किया जाता है, जबकि गोमूत्र का इस्तेमाल कभी-कभी पारंपरिक चिकित्सा में भी किया जाता है । डेयरी उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । अपनी विशाल गायों की आबादी के कारण, भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है । यह उद्योग लाखों किसानों का भरण-पोषण करता है और देश के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान देता है । भारत में गायों की कई देशी नस्लें पाई जाती हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी विशेषताएँ हैं । उदाहरण के लिए, गुजरात की गिर गाय अपनी उच्च दूध उत्पादन क्षमता के लिए जानी जाती है, जबकि राजस्थान की थारपारकर गाय कठोर जलवायु के अनुकूल होने के लिए जानी जाती है ।

संदर्भ सूची

1. त्रिपाठी, आर. (2014) *भारत की प्राचीन अर्थव्यवस्था और पशुधन*. काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. कुमार, एस. (2017) भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में देसी गाय का महत्त्व, एक ऐतिहासिक अध्ययन. *भारतीय सामाजिक अध्ययन पत्रिका*, 9(2), 44–55।
3. मंडल, आर. (2020) गौसंरक्षण एवं भारतीय जीवन-दर्शन. *इंडियन जर्नल ऑफ कल्चर एंड सोसाइटी*, 11(1), 78–89।
4. शर्मा, ए. (2018) देसी गाय और आयुर्वेद: औषधीय गुणों का अध्ययन. *जर्नल ऑफ आयुर्वेदिक साइंस*, 6(3), 25–37।
5. भारतीय पशुपालन विभाग (2020) *भारत में देसी गो वंश की नस्लें और संरक्षण*. कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. राष्ट्रीय गौ आयोग (2021) *गौ आधारित अर्थव्यवस्था और ग्रामीण विकास*. भारत सरकार, नई दिल्ली।
7. राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (2020) *भारत का पशुधन एवं दुग्ध सांख्यिकी*. एन.डी.डी.बी., नई दिल्ली
8. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (2019) *स्वदेशी गोवंश पर शोध रिपोर्ट*. नई दिल्ली।
